|  |
| --- |
| 18. Oktober  |
| **Fest des Heiligen Lukas, Evangelist** |
| Lesung: 2 Tim 4,10-17b; Evangelium: Lk 10,1-9 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1+2 | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  | GL 481, 1+4+5 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 151 | Herr, erbarme dich |
|  | GL 164 | Der in seinem Wort uns hält |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir, Gott, im Himmel Preis und Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 145, 10-13.17-18 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 76, 1 | Der Herr ist nahe |
|  | GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | Oder Psalmenlied: |  |
|  | GL 143, 1 | Mein ganzes Herz erhebet dich |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:*  |
|  | *Ich habe euch erwählt und dazu bestimmt,*  |
|  | *dass ihr Frucht bringt und dass eure Frucht bleibt.* |
|  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 484, 1+3+4 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 361, 1-3 | Mein schönste Zier |
|  | GL 543, 1+4+5 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 281, 2+3 | Seht, wie ich, der |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 357, 2 | Du meine Perl, du werte Kron |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |